BA.LLB II Year IV Semester
SUBJECT : INDIAN HISTORY II
CODE: BL-4004

TOPIC- Casteism

जातिवाद आज संपूर्ण राष्ट्र के सामने एक गंभीर समस्या बनी हुई है। जिसके कारण संपूर्ण राष्ट्र को बहुत बड़ी हानि होती है। जाति एक ऐसा समूह है जिसका खानपान वेशभूषा व रहन–सहन चाल–चलन तथा रीति रिवाज एक जैसे होते हैं, कुछ लोग अपनी जाति से अपनी पहचान बताते हैं और अपनी ही जाति को महान समझते हैं उसकी ही जाति सर्वोपरि है, और दूसरी जितनी भी जातियां हैं वह सब की सब तुच्छ है। इस प्रकार की सोच व्यक्ति के दिमाग में कट्टर जाति की भावना उत्पन्न करती है। जो बहुत ही खतरनाक है।

जात पात का बोलबाला हम प्रत्येक स्थान पर देखते हैं। व्यक्ति जाति की भावना में इतना बह जाता है कि उसको सिर्फ अपनी ही जाति का विकास दिखाई देता है और वह अपनी जाति के विकास के लिए भरपूर प्रयास करता है। आज हम देखते हैं कि मुख्य दो जातियों के बीच प्रतिद्वंद्विता देखने को मिलती हैं। लोगों में जाति इतना भूत दिखाई देता है कि वह दूसरी जाति से नफरत करने लगते हैं।

राजनीति के क्षेत्र में हम देखते हैं कि आज भी हमारे नेता जितने भी राष्ट्रीय नेता है चाहे वह अपने को कितना ही निरपेक्ष कहें लेकिन यह देखने को मिलता है कि जब भी चुनाव का समय आता है तो वह सब नेता इस प्रकार के क्षेत्र से चुनाव लड़ते हैं जिस क्षेत्र में उनकी जाति के मतदाताओं की संख्या अधिक होती है आज तक यह देखन को एक ही उदाहरण नहीं मिलता कि किसी नेता ने इस प्रकार के क्षेत्र से चुनाव लड़ा हो जहां पर उस जाति के मतदाता ना हों क्योंकि यह नेता भी सब जानते हैं कि उसकी जाति ही उनको आंख बंद करके समर्थन दे सकती है और उस नेता के दिमाग में भी जाति के प्रति कट्टरता की भावना आ जाती है और वह अपनी जाति के विकास के लिए ही कार्य करते हैं वह सरकारी योजनाओं को भी वहीं पर लागू करना चाहता है जहां पर उसकी जाति के लोगों की बहुलता अधिक हो और उसकी जाति के लोग लाभान्वित हो।

कुछ लोगों की पहचान उनकी जाति से ही होती है जैसे मुलायम सिंह यादव ने आज तक चुनाव मैनपुरी व आजमगढ़ से ही लड़ा है क्योंकि इन क्षेत्रों में सबसे अधिक संख्या यादव जाति के मतदाताओं की है और इन्होंने यादव जाति के लोगों

को ही सबसे अधिक लाभ पहुंचाया है मुलायम सिंह यादव की सरकार में सबसे अधिक कैबिनेट मंत्री यादव ही थे सबसे अधिक नौकरी यादव जाति के लोगों न ही प्राप्त की है सबसे अधिक नौकरशाहों का उदय उनकी सरकार में यादवों का ही हुआ इस प्रकार से हम देखते हैं कि मायावती जी ने बिजनौर से चुनाव लड़ा यहां से चुनाव इसलिए लड़ा था क्योंकि इस क्षेत्र में सबसे अधिक जनसंख्या दलित समाज के लोगों की थी इसी कारण यह विजय हुई थी इस प्रकार से हम देखते हैं कि अलीगढ़ की विधानसभा अतरौली सीट से कल्याण सिंह चुनाव लड़ते थे क्योंकि अतरौली विधानसभा सीट पर सबसे अधिक मतदाता कल्याण सिंह की जाति लोध जाति के लोगों की हैं, उन्हीं के बिहाप पर कल्याण सिंह विजई होते रहे हैं इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्याण सिंह बुलंदशहर व एटा से सांसद का चुनाव लड़े और जीत हासिल की थी क्योंकि इन सीटों पर लोद मतदाताओं की संख्या सबसे अधिक है इन्हीं सीटों पर कल्याण सिंह का सबसे अधिक प्रभाव रहा है यदि वह राष्ट्रीय नेता थे तो अन्य सीटों से भी चुनाव लड़ सकते थे जबकि ऐसा नहीं किया यहां तक कि उनकी अलीगढ़ सीट से भी उनके चुनाव लड़ने की हिम्मत नहीं की क्योंकि इस सीट पर उनकी जाति के मतदाता कम थे इसलिए अपने गृह जनपद सीट से लोकसभा चुनाव नहीं लड़ पाए।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि चौधरी अजीत सिंह ने चुनाव अभो तक बागपत व मुजफ्फरनगर की ही लोकसभा सीट से लड़ा है क्योंकि इन सीटों पर अजीत सिंह की जाति जाट मतदाता सबसे अधिक है उन्होंने गैर जाट सीट से कभी चुनाव नहीं लड़ा यदि वह ऐसी सीट से चुनाव लड़ते थे तो दूसरी जाति के मतदाता कभी भी उनको विजयी नहीं बनाते, जब दो व्यक्ति आमने–सामने चुनाव लड़ते हैं तो उन दोनों में एक व्यक्ति का चरित्र अपराधी है और दूसरी जाति का व्यक्ति ईमानदार चरित्रवान, शिक्षित व योग्य है लेकिन अपराधी की जाति के उसे वोट नहीं करेंगे, बल्कि अपनी जाति के अपराधी व्यक्ति को ही चुनेंगे। इस प्रकार की सोच मतदाताओं की हो जाती है। अतः उनके अंदर कठोर जातिवाद आ जाता है और वह यह मानते हैं कि अपनी जाति का अपराधी व्यक्ति दूसरी जाति के ईमानदार व्यक्ति से अच्छा होता है और जब इस प्रकार का व्यक्ति विजयी होकर किसी अच्छे पद पर पहुंच जाता है तो वह सिर्फ अपनी जाति के कल्याण के ही विषय में सोचता है और सरकारी योजनाओं को सिर्फ और सिर्फ अपनी जाति के क्षेत्र में ही लागू करता है।

हम देखते हैं कि यदि किसी जाति विशेष का व्यक्ति किसी बोर्ड का चेयरमैन या सदस्य बन जाता है तो वह अपनी जाति के लोगों को ही अधिक मात्रा में नियुक्त करता है ऐसी स्थिति में उन योग्य प्रतिभागियों के साथ अन्याय होता है जिन्होंने

कठोर मेहनत करने के बाद भी उनकी नियुक्ति नहीं हो पाई उनका सिर्फ दोष इतना था कि वह भर्ती करने वाले सदस्यों की जाति के नहीं थे यह स्थिति आज भी देखने को मिलती है।

उत्तर प्रदेश के अंदर जब समाजवादी सरकार थी तो कई बोर्डों के चेयरमैन यादव जाति के थे उस समय पर जितनी भी भर्तियां हुई उनमें 90 प्रतिशत एक विशेष जाति यादव के लाभार्थियों की भर्तियां हुई इलाहाबाद के अंदर उस समय पर दूसरी जाति के अभ्यर्थियों ने इस व्यवस्था के खिलाफ एक बहुत बड़ा आंदोलन चलाया और सरकार पर खुल्लम–खुल्ला आरोप लगाया उस समय पर पुलिस ने आंदोलनकारियों पर लाठीचार्ज किया आंदोलन को दबाने की कोशिश की गई लेकिन आंदोलनकारी पीछे नहीं हटे अंत में सरकार को ऐसे लोगों को पद से हटाना पड़ा तब जाकर के आंदोलन रुक पाया उस समय पर जितनी भी भर्तियां हुई थी उनकी जांच आज तक चल रही है और इसी का परिणाम रहा कि उत्तर प्रदेश से समाजवादी सरकार का पतन हुआ अतः समाजवादी पार्टी के लोग दूसरी जाति के लोगों का विश्वास नहीं जीत पाए और वह उत्तर प्रदेश की सत्ता से बाहर हो गए दूसरी जाति के लोगों को यह विश्वास हो गया कि अब तुम्हारा भविष्य इस सरकार में सुरक्षित नहीं है और चुनाव में इन लोगों ने अपना मत सरकार के विपक्ष में दिया इस प्रकार से उत्तर प्रदेश से समाजवादी सरकार का पतन हुआ

For further queries you may reach us via..
E-mail - mahikumud@gmail.com
Mob - **9412547531**
Dr Mahipal
Teaching Assistant
ILS, CCSU campus, Meerut